Mob No 9934683027
Date - 25/07/2020
Dr Tapali Mukherjee
Associate Professor
H.O.D in Music
R.M. College Saharsa

Study Material for B.A Part III (Hons) ⑧
Paper 5th Theory.
Topic - Gharana (घराना) Previous Not Continued

(5) Kirana Gharana (किराना घराना) - इस घराना की नींव मुगल काल में ही हुई थी जिसके कारण दौताही के संगीतज्ञों को शाहजहांगीर ने यू० पी० के मुजफ्फरनगर जिला के किराना नामक स्थान में आश्रय दिये। इस घराने के प्रतिनिधि गायक अब्दुल करीम खाँ थे। वह मूलतः किराना जिला के [illegible] सहारनपुर के रहनेवाले थे। इसलिए इस घराना का नाम किराना घराना पड़ा। उन्होंने अपनी पिता काले खाँ और चाचा अब्दुल्ला खाँ से संगीत की शिक्षा प्राप्त किये थे। इनके अतिरिक्त ख्याल गायकी की शिक्षा अब्दुल रहमान खाँ से प्राप्त किये थे। वर्तमान समय में इस घराने के प्रमुख प्रतिनिधि कलाकार जैसे हीराबाई बरोडेकर; प० भीमसेन जोशी, सरस्वती-बाई राने; गंगुबाई हंगल; स्व० उ० अमीर खाँ आदि।

विशेषताएँ — स्वरों का सुरीलापन और चैनदारी इस घराने की प्रमुख विशेषताएँ है। यह घराना विशेष रूप से बीनकारों की घराना है, अतः इस घराने की गायकी में लगाव, खीच और मीड़ का काम अधिक होता है। इस घराने में मुख्यरूप से तोड़ी पुरिया, दरबारी, मालकौंष जैसे राग प्रसिद्ध है।

(6) Delhi Gharana (दिल्ली घराना) - इस घराना की आविष्कार मुहम्मदशाह रंगीले के दरबार से हुई इनके दरबारी गायक नियामत खाँ और फिरोज खाँ जिन्हे सदारंग और अदारंग के नाम से जाने जाते हैं।

Scanned with CamScanner

यह होरी गायक मुख्यतः ध्रुपद कलाकार थे, साथ ही साथ उच्च कोटि के वीणावादक भी थे। पं० गुलाम हुसैन जिन्हे मियाँ अचपल के नाम से जाने जाते हैं जो की दिल्ली घराने की संस्थापक है। इनके शिष्य तानरस उस समय के एक श्रेष्ठ कलाकार थे। तानरस उस समय के एक सुयोग्य गायक थे अतः उनकी शिष्य परम्परा भी विशाल थी।

विशेषताएँ — दिल्ली घराने की सम्बन्ध मुख्यतः सारंगी वादक से रहा इसलिए इस घराना ने विलम्बित लय की चीजों मे सूत मींड; गमक और मध्य लय मे स्वरों की कीरत आदि विशेषताएँ हैं। इनमे कठिन, जटिल और पेचदार तानों की प्रयोग किया जाता है। इनके अलावा इस घराना मे सारंगी और सुरबहार जैसे तन्त्र वादक की रहे। इस घराने की मुख्य विशेषता तालों की चलना है। जैसे विलम्बित बंदिशो के साथ तिलवाड़ा, झुमरा और सवारी ताल, मध्यलय की बंदिश के साथ आड़ा चौताल आदि द्रुत लय के साथ तीनताल, एकताल रूपक आदि तालो का प्रयोग किया जाता है कहा जाता है दिल्ली घराने की एक उपशाखा महाराष्ट्र मे गोखले घराने के नाम से प्रसिद्ध हुई।

Continued Next NOT.

Scanned with CamScanner